ॐ

गोशाला के ११ आयाम

: प्रकाशक :

गोसेवा परिवार

१५३ए, मुक्ताराम बाबु स्ट्रीट, कोलकाता - ७

gosevaparivar@gmail.com

www.gosevaparivar.org

: मुद्रण :

नीरज झुनझुनवाला

१०, प्रताप घोष लेन, कोल. ७

: प्रथम संस्करण :

रक्षा बंधन, सम्वत् २०७३

(१८ अगस्त २०१६)

सहयोग राशी : ₹ १०/-

पुस्तक के विक्रय से प्राप्त राशी का उपयोग गोसेवा के कार्यों में ही किया जायेगा।

।। ॐ ।।

गोशाला के ११ आयाम

: लेखक :

ललित आनंद

कोलकाता, प.बंगाल

9331027471

lalit.kolkata@yahoo.com

आत्म निवेदन

पिछले २० वर्षों में छोटी-बड़ी लगभग १०० से अधिक गोशालाओं के दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। इन वर्षों में कई अनुभवी गोसेवकों, विशेषज्ञों एवं वरिष्ट कार्यकर्ताओं का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। उनसे प्राप्त अनुभव एवं ज्ञान को शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है।

साधारण जन-मानस में गोशाला के विषय में स्पष्ट धारना का अभाव दिखाई देता है। इस पुस्तक के माध्यम से उसी अभाव को दूर करने का और **बदलते परिप्रेक्ष्य में गोशाला की महती भूमिका को दर्शाने का प्रयास किया गया है।**

इस पुस्तक के लेखन व प्रकाशन में जिनका सहयोग मिला उनका आभार व्यक्त किये बिना यह पुस्तक अपूर्ण रह जायेगी। माननीय श्री शंकर लालजी, श्री सुनीलजी मानसिंहका व श्री सुभाषजी जैन का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी प्रेरणा से यह पुस्तक लेखन संभव हुआ। आप सभी ने अपने व्यवस्तम कार्यक्रमों में से समय निकालकर इसे पढ़ा एवं अपने बहूमुल्य सुझाव व प्रकाशन हेतु सहमति प्रदान की।

गोसेवा के दैनन्दिन कार्यों में जिनका हर पल साथ मिलता है ऐसे गोसेवा परिवार, कोलकाता के मेरे कार्यकर्त्ता साथियों का हृदय से आभारी हूँ। उनके उत्साह वर्धन व सहयोग से ही इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हुआ।

गोमाता ने इस कार्य के लिए मुझे निमित्त बनाया, इसे मेरा सौभाग्य मानते हुए, गोमाता के चरणों में पुस्तक को समर्पित करता हूँ।

आपसे निवदेन है कि पुस्तक के विषय में आपके सुझाव और विचार हमें अवश्य लिख भेजें।

१८ अगस्त २०१६, कोलकाता

धन्यवाद सहित,
ललित आनंद

ॐ

गोशाला

गोशाला के बारे में विचार आते ही मन में जो चित्र उभरता है वह यह कि एक स्थान पर टिन का शेड बना हुआ है जिसमें कुछ गायें बंधी हुई है, जिनको सुबह शाम चारा दिया जाता है और कुछ कर्मचारी साफ - सफाई करते हुए दिखाई देते हैं। उस गोशाला का खर्च कुछ गोभक्तों के दान से चलता है।

वर्तमान समय में पूरे देश की गोशालाओं की परिस्थिति का आकलन करें तो पता चलेगा कि भारत में छोटी-बड़ी लगभग १०,००० गोशालाएं है। लगभग प्रत्येक सप्ताह एक नई गोशाला

खुल रही है। अधिकांश गोशालाएं दान पर चलती है और उनमें से ज्यादातर की हालत बहुत ही दयनीय है। कई गोशालाओं में गोवंश आजीवन एक ही खूंटे से बंधे रहने को विवश है। उनके चरने की कोई व्यवस्था नहीं होती है। दु:ख की बात यह है कि जो गोशालाएं गायों की सेवा के लिए बने हैं उनमे से कईयों में गायों की सही मायने में सेवा नहीं हो रही। इन गोशालाओं में हर समय पैसे की कमी रहती है। गोशाला संचालकों की सारी मेहनत और सारा समय दान संग्रह में ही व्यय हो जाता है। जिन गोशालाओं को पर्याप्त दान नहीं मिलता वहां की गायों की हालत बहुत खराब रहती है और जिनको अधिक दान मिलता है वहां भ्रष्टाचार फैलने लगता है।

कई गोशालाएं तो दूध उत्पादन का केन्द्र बन गई है। इसके लिए वहां अधिक दूध के लिए जर्सी जैसे विदेशी पशुओं को खरीदा और रखा जाता है। उनको पता ही नहीं कि ये गाय नहीं है। बहुत ही दु:ख की बात है कि कई गोशालाओं में आज भी जर्सी, हॉल्स्टीन आदि विदेशी पशुओं को ही गोमाता समझ कर पूजा और सेवा की जाती है और वहां अपना देशी गोवंश उपेक्षित है।

गोशालाएं केवल भारतीय नस्ल की गायों पर ही कार्य करे यही अपेक्षित है। अन्यथा वह गोशाला नहीं पशुशाला है। इन गोशालाओं में देशी और विदेशी का अंतर बताने की आवश्यकता है।

अधिकतर गोशालाओं में कर्मचारियों का वेतन कम होने के कारण कर्मचारी ठीक से काम नहीं करता या चोरी करता है। ज्यादातर गोशालाओं के संचालक व पदाधिकारी, गोवंश के वैज्ञानिक पक्ष के बारे में अनभिज्ञ हैं। कभी-कभी तो उनको

यह भी नहीं पता होता है कि गायों के लिए क्या खाद्य लाभदायक है और क्या नुकसानदायक। उनको लगता है कि गौ को चारा खिलाने से उनके सारे पाप धुल जायेंगे और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायेगी। गोशाला खोलना, गायों के लिए दान देना व गायों को ग्रोग्रास खिलाना यह एक पुण्य का काम है, इसी भावना से लोग गोशाला चलाते हैं और दान देते हैं।

इन गोशालाओं में गाय, दान का पात्र बनकर रह गई है। जिस प्रकार कोई सक्षम मनुष्य भीख मांगे तो हमें लगता है कि वह तो मेहनत कर अपनी आजीविका चला सकता है, इसलिए उसे भीख नहीं मांगना चाहिए क्योंकि भीख मांगना स्थायी समाधान नहीं है और समाज के लिए भी शोभनीय नहीं है। ऐसे में कोई उसे काम दे दे तो वह उसके लिए स्थायी समाधान होगा। ठीक उसी प्रकार गोवंश के व्यवहारिक महत्व को भूलने के कारण आज गायों के लिए भीख मांगना पड़ता है, लेकिन यदि हम उसके गोबर-गोमूत्र का आर्थिक पक्ष समझ कर उसका उपयोग करने लगें तो हमें गाय के लिए भीख नहीं मांगना पड़ेगा।

क्या गोशाला का काम बस इतना ही है कि कुछ गायों को जीवन पर्यन्त चारा पानी देते रहे? गायों की सेवा कैसे हो? क्या दान के पैसे से चारा लाकर खिलाना ही गोसेवा है? नहीं, मात्र गोग्रास ही पर्याप्त नहीं है। गोसेवा के लिए और भी बहुत कुछ करना होगा। उसी की चर्चा इस पुस्तक में की गई है। गोशाला

बनाते समय यह समझना बहुत जरुरी है कि गोशाला का उद्देश्य गाय को दान का पात्र बनाना नहीं है।

गाय को दान देने से ज्यादा, उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस बात को समझना जरुरी है कि हम गाय को नहीं खिलाते बल्कि गाय हमको खिलाती है। गोशालाएं समाज पर बोझ नहीं बल्कि समाज के बोझ को कम करने की क्षमता रखती है।

"गावो रक्षति रक्षितः"

गो-संरक्षण के कार्य में गोशालाओं का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। हर गाँव में गोशाला की आवश्यकता है। साथ ही यह बात भी ध्यान देने की है कि सभी गाय गोशाला में नहीं रहती और ना ही रह सकती है। अधिकांश गोवंश गाँव में किसानों के घर पर रहता है और वहीं रहना चाहिए। गोशालाओं का काम इन किसानों और गोपालकों के लिए बहु-आयामी गो-सहायता केन्द्र बनना है। इसके लिए समय-समय पर किसानों के सम्मेलन आयोजित करने चाहिए, जहाँ उनको गोवंश के महत्व के बारे में बताया

जाये।

भारत की कुछ गोशालाएं इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। गो-संरक्षण एवं गोसेवा के क्षेत्र में इन गोशालाओं का बड़ा महत्व है। उन्हें गोसेवा अभियान का मेरुदंड भी कह सकते हैं। उन्ही गोशालाओं के अनुभवों पर आधारित है "गोशाला के ११ आयाम"। जिसे पढ़कर बाकी की गोशालाएँ भी अनुसरण कर सके।

***

गोशाला के ११ आयाम

१. सुव्यवस्थित एवं आत्मनिर्भर गोशाला
२. गोशाला में गायों की चिकित्सा के लिए अस्पताल
३. गोसंवर्धन एवं नस्ल सुधार
४. गोपालन एवं कृषि प्रशिक्षण
५. निराश्रित गोवंश का आश्रय
६. गोमहिमा प्रचार का केन्द्र
७. पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र एवं अस्पताल
८. पंचगव्य सामग्री का उत्पादन केन्द्र
९. गो-विज्ञान अनुसंधान केन्द्र
१०. गो-सम्बन्धित सूचना केन्द्र
११. दर्शनीय पर्यटन स्थल

उपरोक्त सभी कार्य कुछ-कुछ गोशालाओं में सफलता पूर्वक चल रहे हैं। उनके अनुभव के आधार पर यह कह सकते हैं कि इन सभी कार्यों को पूरा करना संभव है और आवश्यक भी। अतः जब भी हम गोशाला की कल्पना करें, उसमें ये सभी बातें होनी चाहिए, तभी गोशाला बनाना सार्थक होगा। ***

१ सुव्यवस्थित एवं आत्मनिर्भर गोशाला

"गोशाला बनाने के लिए दान की आवश्यकता हो सकती है लेकिन गोशाला चलाने के लिए दान की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।"

गोशाला बनाते समय यह तय करना चाहिए कि कुछ ही दिनों में गोशाला आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो जाये। आत्मनिर्भर होने का अर्थ है कि दैनन्दिन खर्च के लिए प्रर्याप्त आय के श्रोत निर्माण करना। आत्मनिर्भर बनने के दो उपाय हैं, पहला, खर्च कम करना और दूसरा, आय के श्रोत बढ़ाना। इसके लिए कई प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं। पहली बात तो, गोशाला

व्यवस्थित होनी चाहिए। गोसदनो का निर्माण सटीक पद्धति से करना चाहिए, जिससे साफ सफाई में न्यूनतम मेहनत एवं न्यूनतम कर्मचारियों की आवश्यकता हो। इससे गोशाला में धन की बचत होगी। आजकल साफ-सफाई के लिए कर्मचारी मिलना कठिन हो गया है, अतः जो काम उपकरणों से हो सके उनको उपकरणों से ही करना उचित है।

इसके अलावा गाय का चारा १०० प्रतिशत स्वयं अपनी

जमीन पर उगाना होगा। ऐसा करने से चारे पर होने वाला खर्च बहुत कम होगा, साथ ही गायों का स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। बाजार से खरीदा हुआ चारा महंगा पड़ता है और उसमें मिलावट की भारी संभावना रहती है।

कृषि एवं गोपालन एक ही सिक्के के दो पहलू है। गोपालन के साथ कृषि का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए गोशाला के पास कृषि योग्य भूमि पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए। औसतन १०० गायों के पीछे १० एकड़ जमीन होनी चाहिए अन्यथा आत्मनिर्भरता में कठिनाई आती है। पर्याप्त कृषि भूमि होने से गोशाला बहुत ही कम समय में आत्मनिर्भर बन सकती है। आत्मनिर्भर बनने में दुग्ध उत्पादन सम्मिलित नहीं है। दुग्ध उत्पादन गोशाला का मुख्य उद्देश्य नहीं होना चाहिए। दुग्ध उत्पादन के बिना ही आत्मनिर्भर बनना होगा। गोशाला के पास कच्चे माल के रुप में मुख्यतः गोबर और गोमूत्र उपलब्ध है। इसी गोबर और गोमूत्र से अर्थोपार्जन का मार्ग ढूंढना होगा। आगे के आयामों में अर्थोपार्जन के उपायों का उल्लेख है।

कई गोशालाएं अर्थोपार्जन के लिए गोशाला की जमीन

को किराये पर दे देते हैं। यह उचित नहीं। अर्थोपार्जन का उपाय भी गायों से जुड़ा होना चाहिए।

यह कैसी विडम्बना है कि जिस गोबर-गोमूत्र में स्वर्ण पाया जाता है उस गोबर-गोमूत्र को हम नालियों में बहा रहे हैं और कहते हैं कि हमारे पास धन की कमी है। यदि स्वर्ण नाली में बहेगा तो गोशालाएँ समृद्ध कैसे बनेगी ?

सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी तो वास्तव में नहीं है लेकिन अपने दूध, गोबर और गोमूत्र के माध्यम से स्वर्ण देने वाली गोमाता हमारे पास है, फिर भी हम गरीब हैं तो इसका कारण है हमारा अज्ञान और इस विषय में चिन्तन का अभाव।

***

२ गायों की चिकित्सा के लिए अस्पताल

पहली बात कि गोशाला में गायों के चरने और घूमने के लिए पर्याप्त भूमि होनी चाहिए। इससे गायों का स्वास्थ्य ठीक रहता है और गोमय-गोमूत्र की गुणवत्ता भी बढ़ती है। हर गोशाला में एक पूर्णकालीन-पशु-चिकित्सक होना चाहिए, जो गोशाला के साथ साथ बाहर की गायों का भी उपचार कर सके। कई बार गाँव एवं शहर में गायों की चिकित्सा के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं उपलब्ध नहीं रहती जिसके कारण गायें उपचार के आभाव में कष्ट पाती है। असमय उनकी मृत्यु हो जाती है। इसलिए हर गोशाला का उद्देश्य होना चाहिए कि उनकी गोशाला में

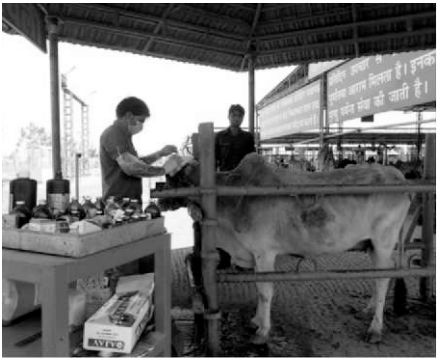

आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण अस्पताल हो, जहाँ गोशाला की ही नहीं बल्कि बाहर की भी गायों की चिकित्सा की जा सके। गाय कई बार प्लास्टिक खा लेती है। उसको ऑपरेशन करके निकालना पड़ता है। ऐसे ऑपरेशन की सुविधा प्रत्येक गोशाला में होनी चाहिए।

इसके अलावा गोशाला में गायों के लिए एक एम्बुलेंस होना चाहिए जिससे बाहर की गायों को आपातकाल में सहायता मिल सके। कई बार गाय सड़क दुर्घटना का शिकार हो जाती है। ऐसे में एम्बुलेंस की आवश्यकता पड़ती है। कई बार पैरों में चोट लगने पर गाय उठ नहीं पाती। ऐसी स्थिति में उसे खड़ा करने के लिए उपयुक्त उपकरणों की व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसा ही कार्य लखनऊ की एक गोशाला "जीव आश्रय" में प्रभावी ढंग से चल रहा है।

रोगों के उपचार में देशी पद्धति एवं होमियोपैथी का प्रयोग करना चाहिए। इसके अच्छे परिणाम मिले हैं और चिकित्सा में खर्च भी कम लगता है।

***

३ गोसंवर्धन एवं नस्ल सुधार

गोशालाएं केवल भारतीय नस्ल की गायों पर ही कार्य करे यही अपेक्षित है। अन्यथा वह गोशाला नहीं पशुशाला है।

कई बार लोग ज्यादा दूध देने वाली अच्छी भारतीय नस्ल की गाय खरीदना चाहते हैं लेकिन उनको मिलती नहीं। वे गलत

लोगों के चक्कर में पड़कर ठगे जाते हैं। ऐसे में गोशालाएं गो-संवर्धन का काम करे और ज्यादा दूध देने वाली अच्छी भारतीय नस्ल की गायें विकसित कर किसानों व गोपालकों को उपलब्ध कराये। इससे गोशाला की आय बढ़ेगी और देश में भारतीय गोवंश की संख्या में भी वृद्धि होगी। कई गोशालाओं में नियम है कि गोशाला से गोवंश बेचते नहीं। उसके कई कारण हो सकते हैं लेकिन गोसंवर्धन के

कार्यक्रम में गायों को बेचने में कोई दोष नहीं है। इन दिनों भारतीय गोवंश की मांग बहुत बढ़ी है। चित्रकुट के **दीनदयाल शोध संस्थान** की गोशाला नस्ल सुधार कार्यक्रम की सफलता का साक्षात् प्रमाण है।

इसके साथ-साथ गोशालाएं सीमेन-बैंक का केन्द्र भी बन सकती हैं। जिससे गाँव-गाँव में देशी गाय का बीज उपलब्ध हो सके। गोशाला आस-पास के गाँवो के लिए गो-प्रजनन केन्द्र का काम करे। इसके माध्यम से गाँव-गाँव में गोसंवर्धन और नस्ल सुधार कार्य का विस्तार होगा।

जो बछड़े अच्छे नन्दी नहीं बन सकते उनको बधिया करवाने का कार्य भी समय-समय पर होना चाहिए जिससे नस्ल ना बिगड़े। एक नन्दी को तीन साल बाद दूसरे गोशाला के नन्दी से बदलना चाहिए अन्यथा नस्ल बिगड़ती है।

देशी गाय और विदेशी गाय में अंतर

देशी गाय	विदेशी गाय
पीठ पर उभार (ककुद्) और गल-कंबल मौजूद होता है।	पीठ सीधी और गल-कंबल नहीं होता है।
इसके दूध में कोई हानिकारक तत्व नही होता। यह बल व बुद्धिवर्धक और रोगनाशक है।	इसके दूध में BCM-7 तत्व होता है, जो मधुमेह, हृदयघात और कैंसर का कारण बनता है।
इसके दूध में वसा ७ प्रतिशत तक होता है।	इसके दूध में वसा ३ प्रतिशत के करीब होता है।
इसके दूध को ए-२ कहते हैं।	इसके दूध को ए-१ कहते हैं।
इनका दूध महंगा मिलता है।	इनका दूध कम मूल्य में बिकता है।

देशी गाय	विदेशी गाय
यह १५ बार से ज्यादा माँ बन सकती है।	यह ४ से ५ बार ही माँ बन सकती है।
इन्हें बिमारियाँ बहुत कम लगती है।	सारी उम्र बिमारियों के चपेट में ही रहती है।
इनमें गर्मी सहन करने की अद्‌भुत शक्ति होती है।	गर्मी में कूलर व पंखों की आवश्यकता होती है।
यह गर्मी में भी भरपूर दूध देती है।	गर्मियों में इनका दूध बहुत कम हो जाता है।
यह कम चारा खाती है।	यह अधिक चारा खाती है।
इनके बैल खेती के लिए उपयोगी हैं।	इनके बैल कृषि के लिए उपयुक्त नहीं होते।
यह बहुत ही सुन्दर और भावनात्मक होती है।	यह बदसूरत और भावना विहीन होती है।
यह हजारों वर्षों से भारत भूमि पर विकसित हुई है।	विदेशों से भारत लाई गई। भारत के जलवायु के अनुकूल नहीं है।

***

४ गोपालान एवं कृषि प्रशिक्षण

आज की युवा पीढ़ी गोपालान एवं कृषि कार्य से दूर होती जा रही है। गोबर - गोमूत्र से कैसे खेती की जाती है यह बात आज का किसान भूल गया है। किसी ने उनको सिखाया नहीं। उनको गो-आधारित शून्य लागत कृषि की जानकारी देने का माध्यम बने ये गोशालाएं। नई पीढ़ी को गोपालन एवं कृषि कार्य में प्रेरित करने में और उससे अधिकाधिक आय कैसे हो इसके बारे में प्रशिक्षित करने में प्रत्येक गोशाला की भूमिका होनी चाहिए। इससे गाँव का किसान गोशाला से जुड़ेगा। ऐसा करने से ग्राम विकास का महत्वपूर्ण कार्य गोशाला के माध्यम से पूर्ण होगा। ग्राम-ग्राम, घर-घर गोपालन बढ़े, यह देखना भी गोशाला का काम है। इसके लिए कई प्रकार के प्रशिक्षण- पाठ्यक्रम बनाये जा सकते हैं।

***

५ निराश्रित गोवंश का आश्रय

विडम्बना है कि कई गोशालाएँ बिना दूध का गोवंश लेने से इनकार कर देते हैं। जबकि गोशाला का धन खर्च कर दूधारु गाय खरीदते हैं। गोशालाएं दूध वाली गायों के लिए नहीं। वो तो डेरी का काम है। दूध की गाय तो कोई भी पाल सकता है। गोशालाएँ बिना दूध की गायों के लिए है। कई बार किसी न किसी कारण वश गोपालक अपने गोवंश को घर से निष्कासित कर देता है। ऐसे में वह गोवंश दर-दर की ठोकरें खाता है। सड़क के किनारे

कचरे में भोजन ढूंढ़ता है। ऐसे में प्लास्टिक एवं अन्य घातक वस्तुएँ उसके पेट में चली जाती है और परिणामतः कई बार उसकी मृत्यु भी हो जाती है। ऐसे निराश्रित गोवंश सामान्य जनता के लिए भी समस्या का कारण बनते हैं। उन निराश्रित गोवंश के लिए गोशालाओं में स्थान होना चाहिए। कई आवारा सांड सड़कों पर घूमते रहते हैं। उनके लिए भी गोशाला में आश्रय होना चाहिए।

***

६ गोमहिमा-प्रचार केन्द्र

गोशालाएं गोमहिमा-प्रचार का केन्द्र बनना चाहिए। गोशाला के माध्यम से जन-जन तक गोमहिमा की जानकारी पहुँचे, ऐसा प्रयास होना चाहिए। इसके लिए समय-समय पर संगोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए। गोकथाओं एवं भजन-कीर्तन-सत्संग का कार्यक्रम किया जाना चाहिए। गोभक्तों

का सम्मेलन करना चाहिए। लोगों को गोमहिमा का साहित्य उपलब्ध कराना चाहिये। इसके साथ-साथ गोसम्बन्धित साहित्य का पुस्तकालय और बिक्री केन्द्र हो। गोशाला से एक प्रचार गाड़ी भी चलाई जा सकती है। जिसके द्वारा गाँव-गाँव में गोमहिमा का प्रचार प्रसार हो। विभिन्न उत्सवों जैसे गोपाष्टमी, बच्छबारस इत्यादि के आयोजन के माध्यम से भी जन-मानस में गोभक्ति की भावना को जगाने का काम करना चाहिए। इस कार्य में सोशल मीडिया का भी समुचित उपयोग किया जा सकता है।

***

७ पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र एवं अस्पताल

आज देश में मानव चिकित्सा का बड़ा अभाव है। एलोपैथी बहुत महंगी है। इस समस्या का समाधान पंचगव्य आर्युवेद चिकित्सा पद्धति में है। मानव के लिए वरदान है "पंचगव्य"। उसका उपयोग मनुष्य की चिकित्सा में होना चाहिए। इसके लिए योग्य वैद्य की व्यवस्था गोशाला में हो। साथ ही रोगियों के लिए अस्पताल की भी व्यवस्था हो, जहाँ कठिन रोगों से ग्रसित रोगी, रहकर उपचार करा सके। यदि सभी गोशालाओं में पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र बन जाये तो तत्काल **देश में १० हजार नये चिकित्सा केन्द्र प्रारम्भ हो सकते हैं।** ***

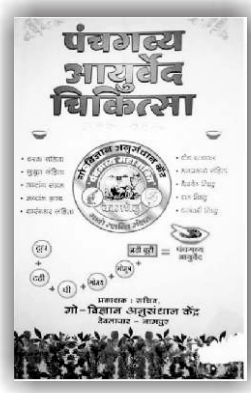

८ पंचगव्य सामग्री का उत्पादन केन्द्र

प्रत्येक गोशाला एक पंचगव्य उद्योग के रुप में विकसित हो। जहाँ पंचगव्य से विभिन्न सामग्रियों का उत्पादन हो और बिक्री हो। इसमें पंचगव्य औषधियाँ, घरेलु उत्पाद जैसे साबुन, शैम्पू, धुप, फिनायल, बर्तन धोने का पाउडर इत्यादि, होली के लिए

बड़कुल्ला और शवदाह के लिए कंडों का उत्पादन किया जा सकता है। यह कार्य गोशाला को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोगी होगा। आज भारत में कई गोशालाएँ ऐसी है जो इस प्रकार के उत्पाद बना रही है और उसके अच्छे परिणाम भी मिल रहे हैं।

***

९ गो-विज्ञान अनुसन्धान केन्द्र

प्रत्येक गोशाला में एक आधुनिक-प्रयोगशाला होनी चाहिए। वहाँ गोवंश एवं पंचगव्य पर अनुसन्धान के कार्य चलने चाहिए। इन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से पंचगव्य के नए-नए उत्पाद विकसित करने में मदद मिलेगी। इस दिशा मे उल्लेखनीय कार्य कर रहा है नागपुर का **गोविज्ञान अनुसन्धान केन्द्र**। आज उनके अनुसंधान का ही परिणाम है कि गोमूत्र के लिए पांच अन्तराष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त हुए हैं। इसके फलस्वरुप प्रतिदिन लाखों लीटर गोमूत्र का विक्रय होने लगा है। उसकी मांग बढ़ी है। यहाँ तक की निर्यात भी होने लगा है। इस विषय में सहयोग के लिए गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, नागपुर से संपर्क कर सकते हैं।

***

१० गो-सम्बन्धित सूचना केन्द्र

गोवंश से सम्बन्धित सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध करा सके ऐसा सूचना केन्द्र गोशाला में विकसित होना चाहिए, जिससे संकट में पड़े किसी भी व्यक्ति, गोपालक, किसान या गोभक्त-कार्यकर्ता को तुरंत समाधान मिल सके। इसमें गाय की चिकित्सा संबंधी जानकारी, पंचगव्य से मानव चिकित्सा की जानकारी, कानूनी जानकारी, सरकारी अनुदान की जानकारियाँ इत्यादि होनी चाहिए। इसके लिए गोशाला द्वारा दिया हुआ एक हेल्पलाइन नंबर हो। आपातकाल की स्थिति में यह व्यवस्था बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। ***

११ दर्शनीय पर्यटन स्थल

शहर के लोग छुट्टियों में घुमने जाते हैं। कई लोग मन्दिर जाते हैं। यदि गोशालाओं को सुन्दर से सजाया जाये तो लोग घुमने के लिए गोशाला भी जायेगें। वहाँ गौ एवं प्रकृति के बीच उनको आनंद का अनुभव होगा। गोशाला में आगंतुकों के लिए प्रसाद की भी व्यवस्था रखनी चाहिए। यदि गोशाला शहर से दूर

हो तो छुट्टीयों के दिन आने-जाने के लिए बस की भी व्यवस्था हो। यातायात की व्यवस्था रहने से लोगों का गोशाला जाने के प्रति मन बनता है। इससे गोशाला के कार्यकलापों का प्रचार होता है और साथ ही गोशाला के उत्पादों की बिक्री भी बढ़ती है। ***

गोशाला से ग्राम विकास तक

गोशाला का कार्य गोशाला की चार दिवारी तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। उसका विस्तार निकट के गावों तक भी होना चाहिए अर्थात गोशाला की सेवाएं आस-पास के गावों तक पहुँचनी चाहिए। अतः वहाँ के किसानों एवं गोपालकों के लिए उस गोशाला की सभी सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। एक बड़ी गोशाला आस-पास के कम से कम १० गावों तक गो-संबंधित सेवाएँ पहुँचा सकती है।

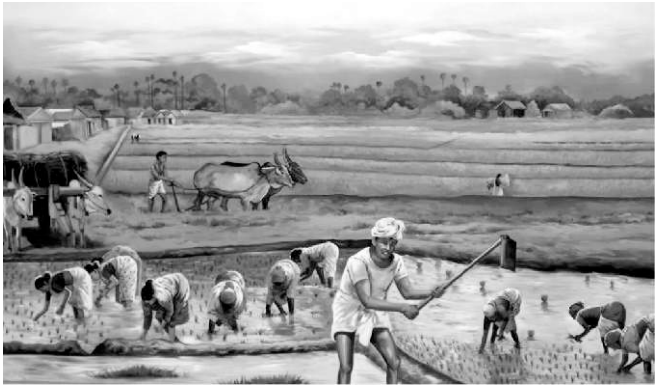

ऐसा होने पर लगभग १ लाख गाँव तक गोसंवर्धन का कार्य आसानी से पहुँच जायेगा।

समय बदल रहा है, आने वाले दिनों में जनता उन गोशालाओं से दूर हो जायेगी जो सिर्फ लोगों की भावनाओं का दुरुपयोग करते हैं। लोग उन्ही गोशालाओं को ही दान व सहयोग करेंगे जिनमे उपरोक्त सभी कार्यक्रम होते होंगे।

जिस दिन गोशालाएं इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर चलाई जाने लगेगी उस दिन ये गोशालाएँ देश की धरोहर सिद्ध होगी और उनका महत्व कई गुना बढ़ जायेगा। यह गोसंरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक कदम होगा। समाज व सरकार दोनों को इस विषय में दिशा-निर्देश जारी करना चाहिए और क्रियांवयन में सहयोग करना चाहिए।

गोसेवा परिवार द्वारा उपरोक्त सभी विषयों पर विस्तृत जानकारी के लिए समय-समय पर कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी। यदि, आप इन कार्यशालाओं से जुड़ना चाहते हैं तो अपनी पूरी जानकारी हमें ईमेल पर भेजें।

***

गोबर के कण्डों से अन्तिम संस्कार

गोशालाओं के गोबर का बड़ी मात्रा में उपयोग करने का यह सरलतम मार्ग है। इसके और भी कई लाभ हैं।

१. सर्वप्रथम गोबर के कण्डों से गोशालाओं को आय होगी। एक शव-दाह से ४० गायों का १ दिन का चारा मिलता है।
२. ऐसा करने से लकड़ी बचेगी, जिससे पेड़ बचेंगे। गोबर के १ शव-दाह से १५ वर्ष की आयु के २ पेड़ों की रक्षा होती है। प्रतिदिन लाखों पेड़ बचेंगे।
३. पेड़ बचने से पर्यावरण की रक्षा होगी।
४. लकड़ी के धुँए से प्रदुषण होता है, इसके विपरीत गोबर के धुँए से प्रदुषण घटता है।
५. गोबर की राख नदी में बहाने से नदी का पानी साफ होता है।
६. इससे ग्रामीण महिलाओं को आजीविका का साधन मिलेगा।
७. दिवंगत आत्मा और उनके परिवार वालों को गोरक्षा का पुण्य प्राप्त होगा।

इसमें लकड़ी जितना ही खर्च और लकड़ी जितना ही समय लगता है। यह कोई नया प्रयोग नही है, कई वर्षों से भारत के कई स्थानों पर सफलता पूर्वक गोबर से शव-दाह चल रहा है। अभी भी कई स्थानों पर चालू करना बाकी है।

***

करेगा कौन ?

गोशाला को प्रभावी बनाने के लिए साधन से पहले समर्पित कार्यकर्त्ता की आवश्यकता है।

लोगों का कहना है कि यह सभी बातें सुनने और कहने में तो अच्छी लगती है परन्तु प्रश्न यह उठता है कि इनको करेगा कौन? ऐसा व्यक्ति कहाँ मिलेगा जो इन विषयों में प्रतिशिक्षित और जानकार हो?

उपरोक्त सभी आयामों को गोशालाओं में क्रियान्वित कर सके, इसके लिए योग्य व प्रतिशिक्षित व्यक्ति तैयार करने का कार्य चल रहा है। यदि किसी गोशाला में ऐसे गोसेवा-व्रति व्यक्ति की आवश्यकता हो तो कृपया हमसे सम्पर्क करें।

गोसेवा परिवार

१५३ए, मुक्ताराम बाबु स्ट्रीट, कोलकाता - ७

gosevaparivar@gmail.com

www.gosevaparivar.org

गोसेवा-व्रति

गोशाला के ११ आयामों को सभी गोशालाओं में क्रियान्वित करने हेतु योग्य, परिश्रमी, उर्जावान, समर्पित और गोसेवा-भाव-सम्पन्न युवाओं की आवश्यकता है। गोसेवा के साथ-साथ आजीविका का सुअवसर प्राप्त करें। वेतन के साथ आवास की व्यवस्था गोशाला में रहेगी। इच्छुक युवा सम्पर्क करें।